प्रातः क्लास 31-12-68 ओमशान्ति पितामी शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। जब से बाप बना है तब से टीचर भी है, तब से गुरु की रूप में शिक्षा भी दे रहे हैं। यह तो बच्चे समझते नहीं हैं। जब कि वह बाप टीचर गुरु है तो छोटा बच्चा तो नहीं है ना। ऊंच ते ऊंच, बड़े ते बड़ा है। वह बाप जानते हैं यह सभी मेरे बच्चे हैं। ड्रामा अपने अनुसार पुकारा भी है कि आकर के हमको पावन दुनिया में ले चलो। परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। अभी तुम समझते हो पावन दुनिया सतयुग को, पतित दुनिया कलियुग को कहा जाता है। कहते भी हैं आकर के हमको रावण के जेल से लिबरेट कर दुःखों से छुड़ाकर अपने शान्तिधाम सुखधाम ले चलो। नाम दोनों अच्छे हैं मुक्ति-जीवनमुक्ति वा शान्तिधाम सुखधाम। सिवाय तुम बच्चों के और किसको बुधि में नहीं है कि शांतिधाम कहां सुखधाम कहां होता है। बिल्कुल ही बेसमझ हैं। तुम्हारी एमआबजेक्ट ही समझदार बनने की है। बेसमझों के लिये एमआबजेक्ट होती है कि ऐसा समझदार बनना है। सभी को सिखाना है यह है एमआबजेक्ट। मनुष्य से देवता बनना है। यह है ही मनुष्यों की सृष्टि। वह है देवताओं की सृष्टि। सतयुग की है देवताओं की सृष्टि। तो जरूर मनुष्यों की सृष्टि कलियुग में होगी ना। अभी मनुष्य से देवता बनना है तो जरूर पुरुषोत्तम संगम युग भी होगा। वह है देवतायें यह है मनुष्य। यहां सभी बेसमझ मनुष्य हैं। देवतायें हैं समझदार। परन्तु मनुष्य अपने को बेसमझ समझते नहीं हैं। बाप बैठ समझाते हैं रावण तुमको कितना बेसमझ बनाती है। फिर बाप आकर समझदार बनाते हैं। बाप जो विश्व का मालिक है, भल मालिक बनता नहीं हैं परन्तु गाया जाता है ना। बेहद का बाप बेहद का सुख देने वाला है। बेहद का सुख होता ही है नई दुनिया में। और बेहद का दुःख होता है पुरानी दुनिया में। देवताओं के चित्र भी तुम्हारे सामने हैं। उन्हीं का गायन भी है आजकल तो मनुष्य 5 भूतों को भी पूजते रहते हैं। अभी बाप तुमको समझाते हैं तुम हो पुरुषोत्तम संगम युग पर। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हैं। हमारी एक टांग स्वर्ग में एक टांग नर्क में है। रहे तो यहां पड़े हैं परन्तु बुधि नई दुनिया में है। और जो नई दुनिया में ले जाते हैं उनको याद करना है। बाप की याद से ही तुम पवित्र बनते हो। यह शिव बाबा बैठ समझाते हैं। शिवजयन्ति मनाते तो जरूर हैं। परन्तु शिव बाबा कब आया क्या आकर किया कुछ भी पता नहीं है। शिवरात्रि मनाते हैं। शिव की रात्रि मनाते हैं। और कृष्ण की जयन्ति मनाते हैं। वही अक्षर जो कृष्ण के लिये कहते वही शिव के लिये तो नहीं कहेंगे। इसलिये उनको फिर शिवरात्रि कहते हैं। अर्थ कुछ नहीं समझते हैं। तुम बच्चों को तो अर्थ समझाया जाता है। भक्ति मार्ग की रात्रि, ज्ञान मार्ग का दिन है। भक्ति मार्ग को घोर अंधियारा कहा जाता है। परन्तु यह तो और कोई समझते नहीं हैं। घोर अंधियारा क्यों है क्योंकि बहुत भटकना पड़ता है। अथाह दुःख है। अथाह दुःखों और अथाह सुखों का वर्णन भी जरूर संगम पर ही होगा ना अथाह दुःख है कलियुग के अन्त में। फिर अथाह सुख होते हैं सतयुग में। यह तुम बच्चों को अभी ज्ञान है। तुम आदि मध्य अन्त को जानते हो। जिन्होंने कल्प पहले पढ़ा है वह अब पढ़ेंगे। जिसने जो पुरुषार्थ किया है वही करेंगे। और ऐसा ही पद पद पावेंगे। तुम्हारी बुधि में पूरा चक्र है। तुम्हीं ऊंच ते ऊंच पद पाते हो। फिर तुम उतरते भी ऐसे हो। बाप ने समझाया है यह जो भी मनुष्यों की आत्मायें हैं, माला है ना। सभी नम्बरवार आते हैं। हरेक एक्टर्स को अपना2 पार्ट मिला हुआ होता है। किस समय किसका क्या पार्ट बजाना है यह अनादि बना बनाया ड्रामा है। जो बाप बैठ समझाते हैं। अभी जो तुमको बाप समझाते हैं वह अपने भाईयों को समझाना है। तुम्हारी बुधि में है हर 5000 वर्ष बाद बाप आकर हमको समझाते हैं। हम फिर भाईयों को समझाते हैं। भाई भाई आत्मा के सम्बन्ध में है। बाप कहते हैं इस समय में तुम अपने को अशरीरी आत्मा समझो। आत्मा को ही अपने बाप को याद करना है पावन बनने लिये। आत्मा पवित्र बनती है तो शरीरभी पवित्र मिलता है। आत्मा अपवित्र तो जेवर भी अपवित्र। नम्बरवार तो होते ही हैं। एक न मिले दूसरे से। नम्बरवार तो होते हैं। फिचर्स एक्टर्स भी एक न मिले दूसरे से। नम्बरवार ही सभी अपना2 पार्ट बजाते हैं। फर्क नहीं पड़ सकता। नाटक में वही सीन

देखेंगे जो कल देखी होंगी। वही रिपीट होगी। यह फिर बेहद का और कल का ड्रामा है। कल तुमको समझाया था, तुमने राजाई ली फिर राजाई गवांई। आज फिर समझ रहे हो राजाई पाने लिये। आज भारत पुराना नर्क है, कल नया स्वर्ग होगा। तुम्हारी बुधि में है अभी हम स्वर्ग नई दुनिया में जा रहे हैं। श्रीमत पर श्रेष्ठ बन रहे हैं। श्रेष्ट जरूर श्रेष्ठ सृष्टि पर ही रहेंगे। यह ल0ना0 श्रेष्ठ हैं तो श्रेष्ठ स्वर्ग में ही रहते हैं। भ्रष्ठ नर्क में रहते हैं। यह राज तुम अभी समझते हो। इस बेहद के ड्रामा को कोई भी अच्छी रीत समझे तब बुधि में बैठे। शिवरात्रि भी मनाते हैं। परन्तु जानते कुछ भी नहीं हैं। तो अभी तुम बच्चों को रिफ्रेश करना होता है। हर 12 मास बाद आपस में मिल रिफ्रेश होते हो। औरों को भी रिफ्रेश करते हो। सन्यासी आदि कोई भी यह नहीं जानते। बाप आये हैं तो क्या कर के गये। ल0ना0 के लिये कहेंगे राज्य कर के गये। परन्तु कब? राधे कृष्ण का लक्ष्मी ना0 से क्या सम्बन्ध है। कुछ भी पता नहीं। जैसे कि कुछ जानते ही नहीं। ऐसे भी नहीं कि मैं कोई ज्ञान है। नहीं। ज्ञान से यह सदगति पाये हुये हैं। फिर ज्ञान की दरकार ही नहीं। अभी तुमको ज्ञान मिल रहा है फिर सदगति को पा लेंगे। बाप कहते हैं मैं स्वर्ग में नहीं आता हूं। मेरा पार्ट ही है पतित दुनिया को बदल पावन दुनिया बनाना। वहां तो तुम्हारे पास कास्ट के खजाने होते हैं। यहां तो कंगाल हो। इसलिये बाप को बुलाते हो आकर बेहद का बा वरसा दो। कल्प कल्प बेहद का वरसा मिलता है। फिर कंगाल भी हो जाते हैं। चित्रों पर बैठ समझाओ। तब समझ सके। पहले नम्बर में ल0ना0 84 जन्म लेते लेते मनुष्य बन गये हैं। यह ज्ञान अभी तुम बच्चों को मिला है। तुम जानते हो आज से 5000 वर्ष पहले आदि सनातन देवी देवता धर्म था। जिसको वैकुण्ठ पैराडाईज डिटी वर्ल्ड भी कहते हैं। अभी तो नहीं कहेंगे। अभी तो डैविल वर्ल्ड है। डैविल वर्ल्ड की एन्ड, डिटी वर्ल्ड की आदि का अभी संगम है। यह बातें अभी तुम समझते हो। और कोई के मुख से सुन न सको। बाप ही आकर इनका मुख लेते हैं। मुख किसका लेंगे। समझते नहीं हैं बाप की सवारी किस पर होगी। तुम्हारी आत्मा की सवारी इस शरीर पर होती है ना। बाबा को अपनी सवारी तो है नहीं। तो उनको मुख जरूर चाहिए। नहीं तो राजयोग कैसे सिखावे। प्रेरणा से तो कोई नहीं सीखेंगे। तो यह सभी बातें दिल में नोट करनी है। परमात्मा की भी बुधि में सारी नालेज है। तुम्हारी बुधि में भी सारी नालेज बैठनी चाहिए। हर नालेज बुधि ही धारण करती है। कहा भी जाता है तुम्हारी बुधि ठीक नहीं है। पत्थर बुधि तो नहीं हो। बुधि आत्मा में रहती है। आत्मा ही बुधि साथ समझ रही है। तुम्हारी पत्थर बुधि किसने बनाई। अभी समझते हो रावण ने हमारी बुधि बना दी है। कल तुम ड्रामा को नहीं जानते थे। पत्थर बुधि थे। बुधि को एकदम गाडरेज का ताला सा लगा हुआ था। गाड अक्षर तो आता है ना। बाप जो बुधि देते हैं वह बदल कर पत्थर बुधि हो जाती है। फिर बाप आकर ताला खोलते हैं। सभी हैं पत्थर बुधि। सतयुग में होते ही हैं पारस बुधि। तो बाप आकर सभी का कल्याण करते हैं। नम्बरवार सभी की बुधि खुलती है। फिर एक दो के पीछे आते रहते हैं। द्वापर में तो कोई रह न सके। पतित वहां रह न सके। बाप पावन बनाकर पावन दुनिया में ले जाते हैं। वहां सभी पावन आत्मायें रहती हैं। यह है निराकारी सृष्टि। तुम बच्चों को अभी मालूम पड़ा है कि तो अपना घर भी जैसे बिल्कुल नजदीक दिखाई पड़ता है। तुम्हारा घर से बहुत प्यार है तुम्हारे जैसा प्यार तो और कोई का है नहीं। तुम्हारे में भी सभी नम्बरवार हैं। जिसका बाप के साथ लवक है उनका घर के साथ भी लव है। मुरवी बच्चे होते हैं ना। तुम समझते हो यहां तो अच्छी रीत पुरुषार्थ कर मुरवी बच्चा बनेंगे वही उंच पद पावेंगे। छोटा वा बड़ा शरीर के ऊपर नहीं होता है। ज्ञान और योग में जो मस्त हैं वह बड़े हैं। कई छोटों2 यह ज्ञान योग में तीखे हैं तो बड़ों को भी पढ़ाते हैं। नहीं तो कायदा है बड़े छोटों को पढ़ाते हैं। आजकल तो मिडिगेड भी हो जाते हैं। यूं तो सभी आत्मायें मिडिगेड हैं। आत्मा बिन्दी है उनका क्या वर्णन करें। सितारा है। मनुष्य लोग सितारा नाम सुनकर ऊपर में देखेंगे। भारती के सितारे तुम हो। वह है आसमान के। वह जड़ तुम चैतन्य। उन में तो फेर गेर होती है नहीं है। तुम तो 84 जन्म लेते हो। कितना पार्ट बजाते हो। वह तो जड़ है। तुम 84 जन्मों का पार्ट बजाते हो।

३१-१२-६८

पार्ट बजाते2 चमक डल हो जाती है। बैटरी डिसचार्ज हो जाती हैं। फिर बाप आकर भिन्न2 प्रकार से समझाते हैं। क्योंकि तुम्हारी आत्मा डल हो गई है। जो ताकत भरी थी वह खलास हो गई है। अभी फिर बाप द्वारा ताकत भरते हो। तुम अपनी बैटरी चार्ज कर रहे हो। उसमें माया भी बहुत विघ्न डालती है। बैटरी चार्ज करने नहीं देती हैं। तुम चैतन्य बैटरियां हो। जानते हो बाप के साथ योग लगाने से हम सतोप्रधान बनेंगे। अभी तमो प्रधान बने हैं। कोई भी सतोप्रधान तक बैटरी चार्ज नहीं कर सकते हैं। तो फिर सजाएं खाते हैं। पद भी भ्रष्ट हो जाता है। फर्क कितना है। उस हद की पढ़ाई और इस बेहद की पढ़ाई में। कैसे नम्बरवार सभी आत्माएं ऊपर से आती हैं। फिर अपने2 समय पर अपना2 पार्ट बजाने आना है। सभी को अपना अविनाशी पार्ट मिला हुआ है। तुम ने यह 84 का पार्ट कितना बार बजाया होगा। तुम्हारी बैटरी कितना बारी चार्ज हुई है औ डिस चार्ज हुई है। जब जानते हो हमारी बैटरी डिस चार्ज है तो फिर चार्ज करने में देरी क्यों करनी चाहिए। परन्तु माया बैटरी चार्ज करने नहीं देती है। माया बैटरी चार्ज करना तुमको भूला देती है। तुम्हारी बैटरी डिसचार्ज करा देती है। कोशिश करते हो बाप को याद करने परन्तु नहीं कर सकते हो। जो चार्ज कर सतोप्रधान तक नजदीक जाते हैं उनको भी फिर डस चार्ज कर देंगी। जितना बड़ा महारथी अपने को सेफ न समझे। थोडी भी गफलत करने से माया झट बैटरी डिसचार्ज करदेती है। यह पिछाड़ी तक होता रहेगा। फिर जब लड़ाई की अन्त होगी तो सभी खत्म हो जाती हैं। तो जिसकी जितनी बैटरी चार्ज हुई उस अनुसार पद पावेंगे। सभी आत्माएं बाप के बच्चे हैं। बाप ही आकर सभी की बैटरी चार्ज कराते हैं नम्बरवार। फिर कोई सजा भी खाते हैं। खेल देखो कैसा वन्डरफुल बना हुआ है। बाप के साथ योग लगाने से घड़ी2 हठ जाते हैं। तो कितना नुकसान हो जाते हैं। न हटे उसके लिये पुरुषार्थ कराया जाता है। पुरु० करते 2 जब समाप्ती होती है तो फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तुम्हारा पार्ट पूरा होता है जैसे2 कल्प होता है। आत्माओं की माला बनती रहती है रुद्राक्ष की भी माला है। विष्णु की माला भी ऐसे ही समझो। पहले नम्बर में तो उनकी माला रखेंगे ना। बाप देवी दुनिया रचते हैं ना फिर पीछे आसुरी बनती है। जैसे रुद्र माला है वैसे रुण्ड माला है। ब्राह्मणों की माला अभी नहीं बन सकती है। बदली सदली होती रहती है। फाईनल तब होगी जब रुद्र माला बनेगी। यूं ब्राह्मणों की भी माला है परन्तु इस समय नहीं बन सकती है वास्तव में प्रजापिता ब्रह्मा के सभी सन्तान हैं ना। शिव बाबा की सन्तान की भी माला है। ब्रह्मा की भी माला है। विष्णु की भी माला कहेंगे। तुम ब्राह्मण बनते हो तो ब्रह्मा की शिव की भी माला चाहिए। वह भी प्रजापिता है ना। वह ल०ना० राजधानी का पिता वह सच्चा2 मातापिता ठहरा। यह एडाप्ट करते हैं। तो यह सारा ज्ञान तुम्हारे में नम्बरवार धारण करते हैं। सुनते तो सब हैं परन्तु कोई का उस समय ही कानों से निकल जाता है सुनते ही नहीं। कोई तो पढ़ते ही नहीं। उनको पता ही नहीं है भगवान पढ़ाने आये हैं। पढ़ते भी नहीं हैं। यह पढ़ाई तो कितना खुशी से पढ़नी चाहिए। कोई भी विद्वान पंडित आदि को यह नालेज है नहीं। वह तो सब है भक्ति। बहुत भक्ति से क्या होगा। दुर्गति। दुर्गति का पाया है ना। तुम समझाते हो बहुत शा० पढ़ते दुर्गति को पाया है। क्योंकि परमात्मा की ग्लानी करते हो। पहली ग्लानी, कहते हो ईश्वर सर्वव्यापी है। मनुष्यों की बनाई हुई शास्त्र आदि पढ़कर, ईश्वर सर्व व्यापी कहकर दुर्गति को पाया है। गीता कैसे कंठ कर लेते हैं। भाईयों को भी गीता कंठ कराते हैं फिर उनका बहुत मान होता है। अर्थ भी उल्टा सुल्टा समझाये लेते हैं। तो भी कितना मान होता है। तुम कहेंगे यह तो हिरण्य कश्यप है। नाम ही यह। आजकल तो विद्वानों की जैसे कि रंजाई है। उन्हों को सभी माथा टेकते हैं। सतयुग त्रेता में कोई माथा टेकने वाला होता ही नहीं। आगे तो वह पवित्र थे तब उनको माथा टेकते थे। अभी तो पतित पतित को माथा टेकते हैं। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।